ISSN: 0973-0583

भगवान बुद्ध : पुनर्जागरण के अग्रदूत

अनुपम कुमार

शोधार्थी, शिक्षा संकाय, साईं नाथ विश्वविद्यालय, राँची

डॉ० रश्मि शुक्ला

एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, साईं नाथ विश्वविद्यालय, राँची

सारांश

वर्तमान वैश्विक समाज में व्याप्त अनीति, भ्रष्टाचार, आंतकवाद, अन्तवैयक्तिक संबंधों में गिरावट एवं मानवीय मूल्यों का ह्रास इत्यादि विशालकाय समस्याएँ अपने स्वरूप एवं प्राकृतिक विशेषताओं के कारण समाज की मूलभूत संरचना एंव प्रक्रियाओ को पूरी तरह प्रभावित कर रहे हैं। जिसके लिए बहुत कुछ जिम्मेदारी शिक्षा को उठानी पड़ेगी। केवल शिक्षा के उद्देश्यो एवं मूल्यों में ही यथोचित परिवर्तन कर देने से सुधार की अपार सम्भावनाओं में से अधिकांश की प्राप्ति संभव हो जाएगी? इस दृष्टिकोण से जब बौद्ध दर्शन के शैक्षिक विचारों की तरफ हम देखते हैं तो हमें पथ प्रदर्शित करने वाले मूलभूत विचार एवं समाज के पुर्ननिर्माण के लिए आवश्यक आत्मबल प्राप्त होता है। वर्तमान शिक्षा व्यक्ति को एक सफल उद्यमी, अधिकारी, विधार्थी एवं श्रमिक तो बना सकती है परन्तु उनके व्यक्तित्व की पूर्णता तभी सम्भव हो सकती है जबकि व्यक्ति के जीवन के नैतिक मूल्यों की तरफ यथोचित ध्यान देते हुए शैक्षिक मूल्यों का निर्धारण किया जाए। मनुष्य के जीवन मूल्यों में उसकी मान्यताएँ, आदर्श, एवं परम्पराएँ आदि आती हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में बुद्ध द्वारा समाज के पुर्ननिर्माण के लिए किये गये प्रयासों को बताया गया है।

प्रस्तावना

विश्व में कुछ ऐसे महापुरुष रहे हैं, जिन्होंने अपने जीवन से समस्त मानव जाति को एक नई राह दिखाई है। उन्हीं में से एक महान विभूति गौतम बुद्ध थे, जिन्हें भगवान बुद्ध के नाम से जाना जाता है। दुनिया को अपने विचारों से नया मार्ग दिखाने वाले भगवान बुद्ध भारत के एक महान दार्शनिक, समाज सुधारक और बौद्ध धर्म के संस्थापक थे। भारतीय वैदिक परंपरा में धीरे-धीरे जो कुरीतियाँ पनप गईं थीं, उन्हें पहली चुनौती भगवान बुद्ध ने ही दी थी। बुद्ध ने वैदिक परंपरा के कर्मकांडों पर कड़ी चोट की किंतु वेदों और उपनिषदों में विद्यमान दार्शनिक सूक्ष्मताओं को किसी-न-किसी मात्रा में अपने दर्शन में स्थान दिया और इस प्रकार भारतीय सांस्कृतिक विरासत को एक बने-बनाए ढर्रे से हटाकर उसमें नवाचार की गुंजाइश पैदा की। मध्यकाल में कबीरदास जैसे क्रांतिकारी विचारक पर महात्मा बुद्ध के विचारों का गहरा प्रभाव दिखता है। डॉ० अंबेडकर ने भी वर्ष 1956 में अपनी मृत्यु से कुछ समय पहले बौद्ध धर्म अपना लिया था और तर्कों के आधार पर स्पष्ट किया था कि क्यों उन्हें भगवान बुद्ध धर्म-प्रवर्तकों की तुलना में ज्यादा लोकतांत्रिक नजर आते हैं। आधुनिक काल में राहुल सांस्कृत्यायन जैसे वामपंथी साहित्यकार ने भी बुद्ध से प्रभावित होकर जीवन का लंबा समय बुद्ध को पढ़ने में व्यतीत किया।

भगवान बुद्धः जीवन वृत्तांत

भगवान बुद्ध का जन्म नेपाल की तराइयों में स्थित लुम्बिनी में 563 ईसा पूर्व में वैशाख पूर्णिमा के दिन हुआ था। यह सर्वविदित है कि युवावस्था में उन्होंने मानव जीवन के दुखों को देखा जैसे रोगी व्यक्ति, वृद्धावस्था एवं मृत्यु। इसके विपरीत एक प्रसन्नचित्त संन्यासी से प्रभावित होकर बुद्ध 29 वर्ष की अवस्था में सांसारिक जीवन को त्याग कर सत्य की खोज में निकल पड़े। भगवान बुद्ध ने 528 ईसा पूर्व में वैशाख पूर्णिमा के दिन बोधगया में एक पीपल वृक्ष के नीचे ध्यान करते हुए आत्म बोध प्राप्त किया। वैशाख पूर्णिमा के दिन ही 483 ईसा पूर्व में कुशीनगरा नामक स्थान पर भगवान बुद्ध को निर्वाण प्राप्त

हुआ। उनकी मृत्यु के पश्चात उनके शिष्यों ने राजगृह में एक परिषद का आह्वान किया, जहाँ बौद्ध धर्म की मुख्य शिक्षाओं को संहिताबद्ध किया गया। इन शिक्षाओं को पिटकों के रूप में समानुक्रमित करने के लिये चार बौद्ध संगीतियों का आयोजन किया गया जिसके पश्चात् तीन मुख्य पिटक बने। विनय पिटक (बौद्ध मतावंलबियों के लिए व्यवस्था के नियम) सुत पिटक (बुद्ध के उपदेश सिद्धांत) तथा अभिधम्म पिटक (बौद्ध दर्शन) जिन्हें संयुक्त रूप से त्रिपिटक कहा जाता है। इन सब को पाली भाषा में लिखा गया है।

बुद्ध दर्शन के सकारात्मक पहलू

बुद्ध के दर्शन का सबसे महत्त्वपूर्ण विचार 'अत्त दीपो भव: अर्थात् 'अपने दीपक स्वयं बनो। इसका तात्पर्य है कि व्यक्ति को अपने जीवन का उद्देश्य या नैतिक-अनैतिक प्रश्न का निर्णय स्वयं करना चाहिये। यह विचार इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह ज्ञान और नैतिकता के क्षेत्र में एक छोटे से बुद्धिजीवी वर्ग के एकाधिकार को चुनौती देकर हर व्यक्ति को उसमें प्रविष्ट होने का अवसर प्रदान करता है। बुद्ध के दर्शन का दूसरा प्रमुख विचार-मध्यम मार्ग के नाम से जाना जाता है। सूक्ष्म दार्शनिक स्तर पर तो इसका अर्थ कुछ भिन्न है, किंतु लौकिकता के स्तर पर इसका अभिप्राय सिर्फ इतना है कि किसी भी प्रकार के अतिवादी व्यवहार से बचना चाहिए। बुद्ध दर्शन का तीसरा प्रमुख विचार -'संवेदनशीलता है। यहाँ संवेदनशीलता का अर्थ है दूसरों के दुखों को अनुभव करने की क्षमता। वर्तमान में मनोविज्ञान जिसे समानुभूति (Sympathy) कहता है, वह प्राय: वही है जिसे भारत में संवेदनशीलता कहा जाता रहा है। बुद्ध दर्शन का चौथा प्रमुख विचार यह है कि वे परलोकवाद की बजाय इहलोकवाद पर अधिक बल देते हैं। बुद्ध के समय प्रचलित दर्शनों में चार्वाक के अलावा लगभग सभी दर्शन परलोक पर अधिक ध्यान दे रहे थे। उनके विचारों का सार यह था कि इहलोक मिथ्या है और परलोक ही वास्तविक सत्य है। इससे निरर्थक कर्मकांडों तथा अनुष्ठानों को बढ़ावा मिलता था। बुद्ध ने जानबूझकर अधिकांश पारलौकिक धारणाओं को खारिज किया। बुद्ध दर्शन का पाँचवा प्रमुख विचार यह है कि वे व्यक्ति को अहंकार से मुक्त होने की सलाह देते हैं। अहंकार का अर्थ है मैं की भावना। यह मैं ही अधिकांश झगड़ों की जड़ है। इसलिए व्यक्तित्व पर अहंकार करना एकदम निरर्थक है। बुद्ध दर्शन का छठा प्रमुख विचार द्वय परिवर्तन के विश्वास से संबंधित है। बुद्ध को इस बात पर अत्यधिक विश्वास था कि हर व्यक्ति के भीतर अच्छा बनने की संभावनाएँ होती हैं, जरूरी यह है की उस पर विश्वास किया जाए और उसे समुचित परिस्थितियाँ प्रदान की जाए।

बुद्ध दर्शन के नकारात्मक पहलू

बुद्ध का सबसे कमजोर विचार उनका यह विश्वास है कि संपूर्ण जीवन दुखमय है। उन्होंने जो चार आर्य सत्य बताए हैं, उनमें से पहला 'सर्वम दुखम है अर्थात सबकुछ दुखमय है। इस बिंदु पर बुद्ध एकतरफा झुके हुए नजर आते हैं जबकि जीवन को न तो सिर्फ दुखमय कहा जा सकता है और न ही सिर्फ सुखमय। सत्य तो यह है कि सुखों की अभिलाषा ही वे प्रेरणाएँ है जो व्यक्ति को जीवन के प्रति उत्साहित करती है। बुद्ध के विचारों में एक अन्य महत्त्वपूर्ण कमी नारियों के अधिकारों के संदर्भ में दिखती है। जैसे महिलाओं को शुरूआत में संघ में प्रवेश नहीं देना। ऐसा माना जाता है कि उन्होंने अपने शिष्य आनंद से कहा था कि अगर संघ में महिलाओं का प्रवेश न होता तो यह धर्म एक हजार वर्ष तक चलता पर यह अब 500 वर्ष ही चल पाएगा। जबकि वर्तमान में महिलाएँ हर क्षेत्र में पुरुषों से कंधे से कंधा मिला कर चलने में सक्षम हैं।

भगवान बुद्ध के विचारों की प्रासंगिकता

भगवान बुद्ध भारतीय विरासत के एक महान विभूति हैं। उन्होंने संपूर्ण मानव सभ्यता को एक नयी राह दिखाई। उनके विचार उनकी मृत्यु के लगभग 2500 वर्षों के पश्चात् आज भी हमारे समाज के लिये प्रासंगिक बने हुए हैं। वर्तमान समय में बुद्ध के स्वनिर्णय के विचार का महत्त्व बढ़ जाता है। दरअसल, आज व्यक्ति अपने घर, ऑफिस, कॉलेज आदि जगहों पर अपने जीवन के महत्त्वपूर्ण फैसले भी स्वयं न लेकर दूसरे की सलाह पर लेता है। अत: वह वस्तु बन जाता है। बुद्ध का अत्त दीपो भव: का सिद्धांत व्यक्ति को व्यक्ति बनने पर बल देता है।

बुद्ध का मध्यम मार्ग सिद्धांत आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना बुद्ध के समय था। उनके इन विचारों की पुष्टि इस कथन से होती है कि वीणा के तार को उतना नहीं खींचना चाहिए कि वह टूट ही जाए या फिर उतना भी

उसे ढीला नहीं छोड़ा जाना चाहिये कि उससे स्वर ध्वनि ही न निकले। दुनिया में तरह-तरह के झगड़े हैं, जैसे-सांप्रदायिकता, आतंकवाद, नक्सलवाद, नस्लवाद तथा जातिवाद इत्यादि। इन सारे झगड़ों के मूल में बुनियादी दार्शनिक समस्या यही है कि कोई भी व्यक्ति देश या संस्था अपने दृष्टिकोण से पीछे हटने को तैयार नहीं है। इस दृष्टि से इस्लामिक स्टेट जैसे अतिवादी समूह हो या मॉब लिंचिंग विचारधारा को कटर रूप में स्वीकार करने वाला कोई समूह हो या अन्य समूह सभी के साथ मूल समस्या नजरिये की ही है। भगवान बुद्ध के मध्यम मार्ग सिद्धांत को स्वीकार करते ही हमारा नैतिक दृष्टिकोण बेहतर हो जाता है। हम यह मानने लगते हैं कि कोई भी चीज की अति होना घातक होता है। यह विचार हमें विभिन्न दृष्टिकोणों के मेल-मिलाप तथा आम सहमति प्राप्त करने की ओर ले जाता है।

भगवान बुद्ध का यह विचार की दु:खों का मूल कारण इच्छाएँ हैं। आज के उपभोक्तावादी समाज के लिए प्रासंगिक प्रतीत होता है। दरअसल प्रत्येक इच्छाओं की संतुष्टि के लिए प्राकृतिक या सामाजिक संसाधनों की आवश्यकता पड़ती है। ऐसे में अगर सभी व्यक्तियों के भीतर इच्छाओं की प्रबलता बढ़ जाए तो प्राकृतिक संसाधन नष्ट होने लगेंगे, साथ ही सामजिक संबंधों में तनाव उत्पन्न हो जाएगा। ऐसे में अपनी इच्छाओं को नियंत्रित करना समाज और नैतिकता के लिए अनिवार्य हो जाता है।

निष्कर्ष:

प्रत्येक विचारक की तरह बुद्ध कुछ बिंदुओं पर आकर्षित करते हैं तो कुछ बिंदुओं पर नहीं कर पाते हैं। विवेकशीलता का लक्षण यही है कि हम अपने काम की बातें चुन लें और जो अनुपयोगी हैं उन्हें त्याग दें। बुद्ध से जो सीखा जाना चाहिए, वह यह है कि जीवन का सार संतुलन में है, उसे किसी भी अतिवाद के रास्ते पर ले जाना गलत है। हर व्यक्ति के भीतर सृजनात्मक संभावनाएँ होती हैं, इसलिए व्यक्ति को अंधानुकरण करने के बजाय स्वयं अपना रास्ता बनाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. अल्टेकर, ए0 एस0 (1965) : प्राचीन भारत मे शिक्षा वाराणसी,नन्द किशोर एवं ब्रदर्स।
2. अग्रवाल, एस0 के0 (1979-80): ''शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्वान्त, मार्डन पब्लिशर्स मेरठ।
3. अश्वघोष (1912): बुद्ध चरित्र, बाम्बे ओरियेन्ट पब्लिशिंग कम्पनी।
4. उपाध्याय, बलदेव (1972) : 'बौद्ध दर्शन', मोती लाल बनारसी दास, वाराणसी।
5. उपाध्याय, रामजी (1966) : प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका, देवभारती एवं लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. कौसल्यायन, भदन्त आनन्द (1961) : भगवान बुद्ध और उनका धम्म, सिद्वान्त प्रकाशन, बम्बई।
7. कुमार, अनन्त (1974) : बुद्धकालीन राजगृह, विहार, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना।
8. गार्डन, डी0 एच0 (1970) : भारतीय संस्कृति की प्रागैतिहासिक पृष्ठभूमि, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना।
9. झा, दिजेन्द्र नारायण, श्री मालीकृष्ण मोहन (2001): प्राचीन भारत का इतिहास, दिल्ली विश्वविद्यालय।
10. डॉ० कमल प्रसाद बौद्ध (2002) : बौद्ध धम्म दर्पण, बुद्ध मिशन ऑफ इण्डिया प्रकाशन, पटना, बिहार
11. डॉ0 सुरज, नरेन (1994) : बुद्धिष्ट सोशल एण्ड मोरेल एजुकेशन, प्राइमल पब्लिकेशन
12. डॉ0 राधाकृष्णन, सर्वपल्ली (1970): गौतम बुद्ध और जीवन दर्शन, चतुर्थ संस्करण, राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली।
13. डॉ0 शर्मा, गोपीनाथ (1969): भारत का सम्पूर्ण इतिहास, द्वितीय संस्करण, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा।
14. डॉ0 पाण्डे, विमलचन्द्र (1985): महापरिनिर्वाण, सूत्र दीर्घ 203 (प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास), सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाउस,

❖❖❖